

Chapter 4

Security	सुरक्षा
<p>Don't you think it is very important that while you are at school, you should not feel any anxiety, any sense of uncertainty, but should have a great deal of that feeling of being secure? You know what it is to feel secure? There are different kinds of security, of the feeling that you are safe. While you are very young, you have the security of relying on older people, the feeling that somebody is looking after you and giving you the right food, the right clothing, the right atmosphere; you have the feeling that you are being cared for, looked after—which is essential, which is absolutely necessary while one is very young. As you grow older and go out of the school into the college and so on into life, that security, that feeling that you are physically safe, physically being looked after, goes into another field. You want to feel inwardly, spiritually, psychologically safe; you want to have somebody to help you; to guide you; to look after you; whom you call a guru or guide; or you have some belief or ideal because you want something to rely on.</p>	<p>क्या आपको यह बात अत्यंत महत्त्वपूर्ण नहीं लगती कि जब आप विद्यालय में हों तब आप किसी भी तरह की व्याकुलता अनुभव न करें, आपको अनिश्चितता की भावना महसूस न हो, बल्कि आपमें इस तरह की भावना दृढ़ रहे कि आप यहां पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं? क्या आप जानते हैं कि सुरक्षित अनुभव करना क्या होता है? सुरक्षा अनेक तरह की होती है, आप सुरक्षित हैं इस भावना के कई रूप होते हैं। जब आप बहुत छोटे होते हैं तब आप इस रूप में सुरक्षित होते हैं कि आप अपने से बड़ों पर आश्रित होते हैं, आपमें यह भावना होती है कि कोई आपकी देखभाल कर रहा है और आपको ठीक तरह से भोजन दिया जा रहा है, उचित प्रकार के वस्त्र आदि मिल रहे हैं, आपके आसपास का वातावरण अनुकूल है, आपको महसूस होता है कि आपका ध्यान रखा जा रहा है, आपकी देख-रेख की जा रही है—जो कि बिलकुल ज़रूरी है, वह उस समय परम आवश्यक है जब आप छोटे होते हैं। जैसे-जैसे आप बड़े होते जाते हैं और धीरे-धीरे स्कूल से कॉलेज की ओर और फिर जीवन में आगे की ओर बढ़ते हैं, सुरक्षित होने का यह भाव, यह एहसास कि आप भौतिक रूप से पूर्णतः सुरक्षित हैं, शारीरिक स्तर पर आपकी समुचित देखभाल की जा रही है, यह सारी भावना एक अन्य क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है। आप यह चाहने लगते हैं कि अंततः में, आध्यात्मिक धरातल पर, मनोवैज्ञानिक रूप से भी आप सुरक्षित रहें, आप यह चाहने लगते हैं कि उस धरातल पर कोई आपकी मदद करे, आपका मार्गदर्शन करे, आपका ध्यान रखे जिसे आप गुरु अथवा पथप्रदर्शक की तरह मान सकें, या फिर आप किसी मत-विशेष या सिद्धांत या आदर्श की शरण खोज लेते हैं क्योंकि आप किसी का सहारा पाना चाहते हैं।</p>
<p>The problem of seeking psychological security, safety, is very, very complex, and we won't deal with that now. I think that while you are at school you ought to have physical and emotional and mental stability, the mental and physical feeling that you are being looked</p>	<p>मानसिक धरातल पर सुरक्षित होने की चेष्टा की समस्या एक बहुत जटिल समस्या है और फिलहाल हम उस पर चर्चा नहीं करेंगे। मैं सोचता हूँ कि जिस समय आप स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे होते हैं उस समय आपको शारीरिक, भावनात्मक तथा मानसिक सुस्थिरता अवश्य ही प्राप्त होनी चाहिए, मन और शरीर के तल पर यह महसूस होना चाहिए कि आपकी देखभाल की जा रही</p>

Chapter 4

<p>after, that you are being cared for, that your future is being carefully nurtured, carefully watched over, so that while you are very young, while you are at school, there is no sense of anxiety, no sense of fear. That is essential because to have anxiety, fear, apprehension, wondering what is going to happen to you is very bad, is very detrimental to your thinking; in that state, there can be no intelligence. It is only when you feel you have teachers who are really looking after you; caring for you physically, mentally, and emotionally, who are helping you to find out what you want to do in life—not forcing their opinions or their ways of conduct—that you feel you can grow, that you can live. That is only possible when you are at a school with the proper environment, with the right kind of teachers.</p>	<p>है, आप पर ध्यान दिया जा रहा है, आपके भविष्य को बनाया-संवारा जा रहा है, उस पर चौकसी रखी जा रही है, ताकि जब आप कम उम्र के हैं, जब आप स्कूल में हैं, तो आपको किसी तरह की बेचैनी, किसी तरह का भय अनुभव न हो। यह बिलकुल ज़रूरी भी है, क्योंकि व्याकुलता, भय, आशंका से ग्रस्त होना, भविष्य में आपका क्या होगा इस बारे में चिंता करते रहना बहुत बुरा है। यह आपके सोच-विचार के लिए बहुत नुकसानदायक सिद्ध होता है, उस दशा में आप प्रज्ञाशील नहीं हो पाते। ऐसा केवल तब ही हो पाता है जब आपको यह महसूस हो कि आपके शिक्षक सचमुच आपकी देखभाल कर रहे हैं, शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से आपका पूरा-पूरा ध्यान रख रहे हैं, जीवन में आप क्या करना चाहते हैं इसका पता लगाने में वे आपकी सहायता कर रहे हैं--और अपनी राय या आचरण के तौर-तरीके आप पर थोप नहीं रहे हैं--तभी आपको महसूस हो पाता है कि आप विकसित हो रहे हैं, जीवन को जी रहे हैं। और यह केवल तब संभव है जब आप विद्यालय में अध्ययनरत रहते समय समुचित परिवेश में और उपयुक्त अध्यापकों के साथ होते हैं।</p>
<p>One of the things that prevents the sense of being secure is comparison. When you are compared with somebody else in your studies or in your games or in your looks, you have a sense of anxiety, a sense of fear, a sense of uncertainty. So, as we were discussing yesterday with some of the teachers, it is very important to eliminate in our school this sense of comparison, this giving grades or marks, and ultimately the fear of examination.</p>	<p>सुरक्षा के एहसास में आड़े आने वाली बातों में से एक है तुलना। पढ़ने-लिखने में, खेलों में, या आप कैसे दिखाई देते हैं आदि बातों में जब आपकी तुलना किसी और से की जाती है तो आपमें व्याकुलता की, भय की, दुविधा की भावना पनपने लगती है। अतः, जैसा कि हम कल कुछ शिक्षकों से चर्चा कर रहे थे, यह बहुत ज़रूरी है कि हमारे विद्यालय से इस प्रकार से होने वाली तुलना को पूरी तरह समाप्त किया जाए, अंक और श्रेणी के प्रचलन को और अंततः परीक्षा के भय को पूरी तरह से मिटा देना आवश्यक है।</p>
<p>You are afraid of your examinations, are you not? That means what? There is that threat before you all the time that you might fail, that you are not doing as well as you should, so that during all the years that you live in the school, there is this dark cloud</p>	<p>आपको परीक्षाओं से डर लगता है, लगता है न? इसका मतलब क्या हुआ? यही कि आपको सारे समय यही चिंता सताती रहती है कि कहीं आप फेल न हो जाएं, कहीं आप दूसरों की तरह परीक्षा में कुछ विशेष अच्छा न कर पाएं, इस प्रकार इन सारे वर्षों में जो आप अध्ययन करते हुए बिताते हैं आपके सिर पर परीक्षा रूपी काला डरावना बादल मंडराता ही रहता है। कल</p>

Chapter 4

<p>of examinations hanging over you. We were discussing yesterday with some of the teachers whether it is possible not to have examinations at all but to watch over you every day, month after month, to see that you are learning naturally and happily and easily, to find out what you are interested in and to encourage that interest so that when you leave the school, you go out with a great deal of intelligence, not just merely with the capacity to pass an examination. After all, if you have studied or you have been encouraged to study what you are interested in because you like to do it, in which there is no fear—if you have studied all the time, not just the last two or three months when you have to spurt and read for many hours to pass examinations—and if you are watched over all the time and cared for, then when the examination comes, you can easily pass.</p>	<p>हम कुछ शिक्षकों से इस बारे में बातचीत कर रहे थे कि क्या यह संभव है कि परीक्षाएं रखी ही न जाएं और इस प्रकार की कोई व्यवस्था हो जिसमें आपका दिन-प्रति-दिन ध्यान रखा जा सके, प्रति मास नियमित रूप से यह निश्चित किया जा सके कि आप स्वाभाविक रीति से खुशी-खुशी, आसानी से सीख रहे हैं, यह पता किया जा सके कि आपकी रुचि किस बात में है, और उस रुचि में आपका उत्साह बढ़ाया जाए, ताकि जब आप विद्यालय छोड़कर जाएं तो अत्यंत प्रज्ञावान होकर यहां से बाहर निकलें और आपकी योग्यता केवल परीक्षा पास कर लेने तक सीमित न हो। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आपने अध्ययन किया है या आपको किसी ऐसे विषय का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया गया है जिसमें आपकी रुचि भी है क्योंकि वह आपको प्रिय है, जिसमें आपको जरा भी डर नहीं लगता—यदि आपने केवल परीक्षा पास करने के उद्देश्य से दो या तीन मास तक डट कर पढ़ाई करने के बदले पूरी शिक्षा अवधि में लगातार नियमित अध्ययन किया है—और यदि इस पूरी अवधि में आप पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है, आपकी लगातार परवाह की गयी है, तो जब भी परीक्षा होती है तो आप उसमें सरलता से उत्तीर्ण हो सकते हैं।</p>
<p>You study better when there is freedom, when there is happiness, when there is some interest. You all know that when you are playing games, when you are doing dramatics, when you are going out for walks, when you are looking at the river, when there is general happiness, good health, then you learn much more easily. But when there is the fear of comparison, of grades, of examinations, you do not study or learn so well, but unfortunately, most of your teachers indulge in that old-fashioned theory. Given the right atmosphere of enjoyment, of no fear, of not being compelled to do something, so that he is happy and enjoying life in that state, a student studies much better. But the difficulty is, you see, neither</p>	<p>जब आप स्वतंत्रता का, खुशी का अनुभव करते हैं, जब आप रुचि लेते हैं तो आप बेहतर ढंग से अध्ययन करते हैं। आप सभी जानते हैं कि जब आप खेल आदि खेलते हैं, जब नाटक-अभिनय आदि करते हैं, जब आप भ्रमण करने निकलते हैं, जब आप नदी को देख रहे होते हैं, जब प्रसन्नता की सामान्य भावना, अच्छा स्वास्थ्य इत्यादि मौजूद होते हैं, तो आप अधिक आसानी से सीखने लगते हैं। परंतु जहां तुलना किए जाने का, श्रेणी का, परीक्षाओं का डर होता है वहां आप उतनी अच्छी तरह से अध्ययन नहीं कर पाते या सीख नहीं पाते, लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि आपके अधिकतर अध्यापक पुराने ढर्रे पर ही चलते हैं। यदि सुख-सुविधा पूर्ण समुचित वातावरण दिया जाए, जहां भय न हो, जहां कुछ करने की बाध्यता न हो ताकि विद्यार्थी प्रसन्न रहे और उस स्थिति में जीवन को आनंदपूर्वक जी सके तो वह अवश्य ही अधिक बेहतर अध्ययन करेगा। लेकिन एकमात्र कठिनाई यही है कि इस ढंग से न तो शिक्षक, न ही छात्र कभी सोचते हैं। शिक्षक की दिलचस्पी यहीं तक होती है कि आप</p>

Chapter 4

<p>the teachers nor the students think in these terms at all. The teacher is concerned only that you should pass examinations and go to the next class, and your parents want you to get a class ahead. Neither of them is interested that you should leave the school as an intelligent human being without fear.</p>	<p>परीक्षाएं पास कर लें और अगली कक्षा में पहुंचें, और आपके अभिभावक भी चाहते हैं कि आप अगली कक्षा में पहुंचें। उनमें से किसी को इसमें दिलचस्पी नहीं है कि आप प्रज्ञावान मनुष्य की तरह निर्भय होकर विद्यालय से बाहर आएं।</p>
<p>The teachers and the parents are used to the idea of pushing a boy and girl through examinations because they are afraid that if they are not compelled, if they have no competition, no grades, they will not study. To them, it is a comparatively new thing to bring up and educate boys and girls without comparing, without compulsion, without threat, without instilling fear.</p>	<p>शिक्षक एवं अभिभावक इस धारणा के आदी हैं कि उनके विद्यार्थी, बालक-बालिकाएं किसी भी तरह से परीक्षाएं उत्तीर्ण करते चलें, और उन्हें यह डर होता है कि यदि छात्र-छात्राओं को किसी तरह से बाध्य नहीं किया गया, यदि प्रतियोगिता की भावना, श्रेणी-क्रम आदि न हो तो वे पढ़ाई-लिखाई नहीं करेंगे। उन्हें यह बात बनिस्बत नयी लगती है कि लड़के-लड़कियों का पालन-पोषण और शिक्षा उनमें भय की भावना जगाए बिना भी, तुलना का सहारा लिए बिना भी, बाध्य किए बिना भी और भविष्य की आशंका से डराए बिना भी हो सकती है।</p>
<p>What do you students really think will happen if you have no examinations, no grades? If you were not being compared with somebody else, what would happen to your studies? Do you think that you would study less?</p>	<p>यदि परीक्षा प्रणाली समाप्त कर दी जाए, श्रेणी देना बंद कर दिया जाए तो उसका परिणाम क्या होगा? आप छात्रगण स्वयं इस बारे में वास्तव में क्या सोचते हैं? यदि आपकी तुलना किसी दूसरे से न की जा रही होती तो आपकी पढ़ाई-लिखाई की स्थिति क्या होती? क्या आप यह सोचते हैं कि उस स्थिति में आप अभी की अपेक्षा कम पढ़ते?</p>
<p>Comment : Of course.</p>	<p>एक श्रोता : हां, ऐसा ही होता।</p>
<p>Krishnamurti: I do not think so. It is surprising that, even though you are young, you have already accepted the old theory! It is a tragedy. Look, you are young and you think compulsion is necessary to make you study. But if you are given the right atmosphere, if you are encouraged and looked after, you will surely study well—it does not matter if you pass examinations or</p>	<p>कृष्णमूर्ति : मैं ऐसा नहीं सोचता। यह आश्चर्यजनक बात है कि अभी आप लोग छोटे ही हैं पर पुराने सिद्धांत को स्वीकार कर चुके हैं! यह एक विडंबना ही है। देखिए अभी आप छोटे हैं और आप सोचते हैं कि आप तब ही पढ़ेंगे जब आपको इसके लिए बाध्य किया जाएगा। पर जुरा सोचिए अगर आपको उचित वातावरण मिले, यदि आपको उत्साहित किया जाए, तो आप अवश्य ही अच्छी तरह से पढ़ाई करेंगे—और इसका कोई महत्त्व नहीं है कि आप परीक्षाएं पास करते हैं या नहीं।</p>

Chapter 4

not.	
<p>They have experimented with all this in other countries. Here, we have not thought about all these things, and so you as a student say, 'I must be compelled, compared, forced; otherwise, I won't study.' So, you have already accepted the pattern of the old. You know what the word pattern means? It means the idea, the tradition of the older people. You have not thought it out. Look! While you are young, it is the time of revolution, of thinking out all these problems, not just accepting what the old people say. But the old people insist on your following the tradition because they do not want you to be a disturbing factor, and you accept that.</p>	<p>दूसरे देशों में इस संबंध में प्रयोग किए गए हैं। यहां पर हमने अभी तक इस सब के बारे में सोच विचार नहीं किया है, और इसलिए एक छात्र के रूप में आप कहते हैं, “बाध्य किया जाना जरूरी है, तुलना करना, बलपूर्वक पढ़ाया जाना आवश्यक है, यदि ऐसा न किया जाए तो मैं पढ़ूंगा ही नहीं”। अतएव आप पुराने ढांचे को पहले ही से मान रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि ढांचा शब्द का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है विचार प्रणाली, पुराने लोगों द्वारा स्थापित परंपरा। आपने इस बारे में कभी नहीं सोचा है। देखिए इस ओर ध्यान दीजिए। अभी आप तरुण हैं, यही क्रांति-काल है, इन सारी समस्याओं पर सोच-विचार कर लेने का समय है; बड़े क्या कहते हैं केवल उसे ही स्वीकार नहीं कर लेना है। परंतु ये लोग आप पर दबाव डालते रहेंगे कि आप परंपरा का अनुसरण करें क्योंकि वे यह नहीं चाहेंगे कि आप उनके लिए बाधा खड़ी करें, और आप उनके इस दबाव को स्वीकार कर लेते हैं।</p>
<p>So, the difficulty is going to be because the teachers and you are both thinking that compulsion of some kind, appreciation of some kind, coercion, comparison, grades, examinations, are necessary. It is going to be very difficult to remove all that and to find ways and means so that you study naturally, easily, and happily. You think it is not possible. But we have never tried it. This way—the way of examinations, appreciation, comparison, compulsion—has not produced any great, creative human beings. The people already produced have no initiative; they just become automatic-clerks, governors, or bookkeepers, with very small, meager, dull minds. Do you see this? You are not listening to all this because you think it is impossible. But we have got to try it. Otherwise, you will be living in an atmosphere</p>	<p>अतएव कठिनाई तो बनी ही रहने वाली है क्योंकि शिक्षकगण, और आप लोग भी यही सोचते हैं कि किसी-न-किसी प्रकार का दबाव, प्रलोभन, धमकी, तुलना, श्रेणी दिया जाना, परीक्षाएं बनाए रखना जरूरी है। इस सब को समाप्त किया जाना अत्यंत कठिन होगा, ऐसे तरीके और उपाय खोजना अत्यधिक कठिन होगा जिनसे आप सहज रूप से, सरलतापूर्वक और प्रसन्नतापूर्वक अध्ययन करने लगें। आप सोचते हैं कि ऐसा संभव नहीं है। पर हमने कभी इसका प्रयास करके नहीं देखा है। इस प्रणाली ने--परीक्षाओं की, मूल्यांकन की, तुलना करने की, बाध्यता की प्रणाली ने महान सृजनशील लोगों को उत्पन्न करने में कोई सहायता नहीं की है। इसने जिन मनुष्यों को उत्पन्न किया है, उनमें उत्साह का अभाव है, वे जैसे-तैसे मशीनी ढंग से काम करने वाले बाबू बन गए हैं, शासन-प्रमुख, राज्यपाल आदि बन गए हैं या क्षुद्र-तुच्छ और बुझे मन-मस्तिष्क वाले मुंशी-मुनीम आदि बन कर रह गए हैं। आपने कभी इस ओर ध्यान दिया है? आप इस सबको ध्यानपूर्वक नहीं सुन रहे हैं क्योंकि आपको यह असंभव लग रहा है। परंतु हमें प्रयास तो करना ही होगा। नहीं तो आप भय के वातावरण में, आशंकाग्रस्त माहौल में जीते रहेंगे और ऐसे वातावरण में कोई भी सुख से नहीं</p>

Chapter 4

<p>of fear, of threat, and no one can live happily in such an atmosphere. It is going to be very difficult when one has been used to this traditional way of thinking, living, studying, to completely change, push that aside and find a way to study which you really can enjoy. That can be done only if we all agree, all the students and all the teachers, that there should be no fear, and that it is essential for all of us to feel a sense of emotional, mental, physical security while we are young. Such security does not exist when there are all these threats. The difficulty is that none of us is concerned with many of the deeper problems of life. The teachers are only concerned to help you to pass examinations, to make you study, but they are not concerned with your whole being. Do you understand what I mean? The way you think, the way you feel your outlook, traditions, the kind of person you are as a whole—the conscious and the unconscious—nobody is concerned with all that.</p>	<p>रह सकता है। जब कोई सोचने-विचारने के, जीवन को जीने के, अध्ययन आदि करने के परंपरागत तरीके का आदी हो जाता है तो उसे त्यागकर, पूर्ण रूप से बदलना और शिक्षा की कोई ऐसी प्रणाली खोजना जिसमें आप सचमुच आनंद पूर्वक अध्ययन कर सकें, बहुत ही दुष्कर होता है। यह तब ही किया जा सकता है जब सारे छात्र एवं शिक्षक, सभी मिलकर इस बारे में सहमत हों कि भय नहीं होना चाहिए, और ऐसा होना बहुत आवश्यक है ताकि हम सभी इस छोटी आयु में ही भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक रूप से सुरक्षित अनुभव कर सकें। लेकिन जब तक इन खतरों की आशंका बनी रहती है तब तक इस प्रकार की सुरक्षा संभव नहीं है। कठिनाई यह है कि हममें से कोई भी जीवन की गहनतर समस्याओं की परवाह नहीं करता। शिक्षकों को चिंता केवल यही रहती है कि आपको परीक्षाएं पास कराने में सहायता कैसे करें, आपको अध्ययन करने के लिए कैसे राजी करें, अपनी संपूर्णता में आप जो हैं उसमें उनकी रुचि नहीं है। क्या आप मेरी बात का आशय समझते हैं? आप किस तरीके से विचार करते हैं, आपकी भावनात्मक प्रतिक्रियाएं किस प्रकार की होती हैं, आपका दृष्टिकोण, परंपराएं आदि कैसी हैं, एक संपूर्ण मनुष्य के रूप में आप क्या हैं, सचेतन एवं अचेतन स्तर पर आप क्या हैं—इन सारी चीजों में किसी की रुचि नहीं है।</p>
<p>Surely, the function of education is to be concerned with the whole of your being. You are not just a student to be pushed through certain examinations. You have your affections, your fears. Just watch your emotions, what you want to do, your sex life. Here, in the school, all that the teachers are concerned with is to make you study some subject in which you are not even slightly interested and to pass in it, and then they think you have been thereby educated. To be educated implies, does it not, to understand the whole, the total process, your total being. To understand that, there must be, on your part as well as on the teachers'</p>	<p>निश्चित ही शिक्षा का सरोकार आपके समग्र अस्तित्व से है। आप केवल एक विद्यार्थी ही नहीं हैं जिसे कुछ परीक्षाएं पास करवा देने से शिक्षा का कार्य पूरा हो जाए। आपकी अपनी कुछ रुचियां हैं, कुछ भय हैं। ज़रा अपनी भावनाओं को ध्यान से देखें, आप क्या करना चाहते हैं इसे देखें, अपनी काम भावना को देखें। यहां पर, विद्यालय में, शिक्षकों की एकमात्र चिंता यह होती है कि आप जैसे भी हों सके किसी विषय की पढ़ाई कर लें, चाहे उस विषय में आपकी तनिक भी रुचि नहीं हो और उसमें पास हो जाएं, और यदि वे इसमें सफल हो जाते हैं तो उन्हें लगता है कि आप शिक्षित कर दिए गए हैं। शिक्षित होने का अभिप्राय है कि आपने अपने समग्र अस्तित्व को, जीवन की संपूर्ण प्रक्रिया को, अपने आपको समझ लिया है। उसे समझने के लिए आपमें तथा शिक्षक के भीतर भी ऐसी भावना होना आवश्यक है जिससे आप एक दूसरे पर भरोसा कर सकें, आपमें</p>

Chapter 4

part, a feeling that you can trust each other, that there is affection, that there is a sense of security and not fear. Look! This is not something impossible, something utopian, or a mere ideal. It is not impossible. If all of us put our heads together, we can work this out. It must be worked out in school; if not, the school will be a total failure, like every other school. So, you have to understand that one can really study much better, more easily, in an atmosphere in which there is no fear, in which you are not compelled, forced, compared, driven in the old system, in the old ways. But of that, we must be completely sure. That is what we are working out here in the afternoon with the teachers. We talk over all these problems to see that you go out of this school not as a machine but as a human being with your whole being active, intelligent, so that you properly face all the difficulties of life instead of merely reacting to them according to some tradition.

परस्पर स्नेह हो, सुरक्षा की भावना हो और भय न हो। देखिए! यह कोई असंभव बात नहीं है, काल्पनिक आदर्शवाद या ध्येय नहीं है। यह असंभव नहीं है। यदि हम सभी साथ बैठकर मिलजुल कर विचार करें तो हम तय कर सकते हैं। विद्यालय के स्तर पर ही इसे तय किया जा सकता है, और यदि ऐसा नहीं किया जा सकता है तो विद्यालय पूरी तरह से असफल कहा जाना चाहिए--उसी तरह से जैसे किसी दूसरे विद्यालय को असफल कहा जाता है। अतएव आपको यह समझना होगा कि एक ऐसे वातावरण में जहां भय न हो, जिसमें आपको पुराने ढंग से बलपूर्वक बाध्य करके, तुलना का सहारा ले कर, पुरानी प्रणाली में धकेल न दिया जाता हो, आप ऐसे माहौल में सचमुच बेहतर ढंग से अध्ययन कर सकेंगे, अधिक अच्छी तरह से सरलतापूर्वक पढ़ सकेंगे। परंतु इस बारे में हमारा पूरी तरह से सुनिश्चित होना आवश्यक है। हम दोपहर बाद शिक्षकों से इसी पर चर्चा करने वाले हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप इस विद्यालय को छोड़ते समय यंत्रवत बनकर नहीं, बल्कि एक ऐसे मानव के रूप में यहां से जाएं कि आपका समूचा अस्तित्व सक्रिय रहे, प्रज्ञापूर्ण रहे ताकि आप किसी परंपरा के अनुसार प्रतिक्रिया न करते हुए जीवन की समस्त कठिनाइयों का उपयुक्त रीति से सामना कर पाएं।